

भोले का रूप निराला है शिव भजन लिरिक्स



माथे पे चंदा सजाकर,
अंगो में भस्मी रमाकर,
अपनी जटा से,
गंगा को बहाकर,
बैठा है वो,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पो की माला है।

तर्ज - आज फिर जीने की।

श्यामल रंग सजीला,
उसका तो कंठ है नीला,
मृगच्छाल तन पे सजाए हुए है,
भोला मेरा,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पो की माला है।

करते जब नंदी पे सवारी,
दुनिया हो जाए उनपे वारि,
श्रष्टि नियंता चले जब भ्रमण को,
सब हो मगन,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पो की माला है।

डेरा कैलाश पे जमाकर,
भक्तो का ध्यान लगाकर,
करते है क्षण में समस्या निवारण,
मेरा भोला,
Bhajan Diary Lyrics,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पो की माला है।

माथे पे चंदा सजाकर,
अंगो में भस्मी रमाकर,
अपनी जटा से,
गंगा को बहाकर,
बैठा है वो,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पो की माला है।

समस्त भजनों के लिरिक्स और विडियो बिना इन्टरनेट के भी अपने मोबाइल में देखने के लिए गूगल प्ले स्टोर या एप्पल एप्प स्टोर से 'भजन डायरी एप्प' जरूर इनस्टॉल करें। वेबसाइट - <https://www.bhajandiary.com>



गंगा को बहाकर,
बैठा है वो,
भोले का रूप निराला है,
पहने वो सर्पो की माला है।

Singer – Shiv Kumar Pathak
